AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

ISO 9001:2008 QMS
ISBN / ISSN

# AJANTA

ISSN - 2277 - 5730
Volume - IX, Issue - I, JANUARY - MARCH - 2020
Impact Factor - 6.399 (www.sjifactor.com)

Is Hereby Awarding This Certificate To

**शेख मोहसीन इब्राहीम**

In Recognition of the Publication of the Paper Entitled

**रोजगारोन्मुख हिंदी**

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

**Editor : Vinay S. Hatole**

Ajanta Prakashan, Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad. (M.S.) 431 004 Mob. No. 9579260877,
Tel. No.: (0240) 2400877, ajanta5050@gmail.com, www.ajantaprakashan.com

Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

# AJANTA

Volume - IX, Issue - I,
January - March - 2020
HINDI PART - II

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

# AJANTA

Volume - IX Issue - I January - March - 2020

HINDI PART - II

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖
Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

# CONTENTS OF HINDI PART - II


| अ.क्र. | शोधालेख एवं शोधकर्ता | पृष्ठ क्र. |
|---|---|---|
| १३ | विज्ञापन के क्षेत्र<br>**रंजना वामनराव बिरादार** | ५५-५८ |
| १४ | जनसंचार माध्यम और हिंदी<br>**प्रो. ए. जे. भेवले** | ५९-६२ |
| १५ | बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी की आवश्यकता एवं अनुप्रयोग<br>**प्रो. डॉ. दीपक विनायकराव पवार** | ६३-६७ |
| १६ | नव इलेक्ट्रॉनिक माध्यम और हिंदी<br>**प्रा. डॉ. गजानन चव्हाण** | ६८-७२ |
| १७ | संगणक और हिंदी<br>**डॉ. शंकर रा. पजई** | ७३-७५ |
| १८ | जनसंचार माध्यमों में कम्प्यूटर का प्रयोग<br>**प्रो. डॉ. आबासाहेब राठोड** | ७६-७९ |
| १९ | अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार और महत्व<br>**डॉ. एस. एस. उप्पे** | ८०-८१ |
| २० | हिन्दी प्रचार-प्रसार में जन संचार माध्यमों की भूमिका<br>**डॉ. वंदन बापुराव जाधव** | ८२-८४ |
| २१ | भूमण्डलीकरण के परिदृष्य में हिंदी अनुवाद क्षेत्र के बढ़ते कदम<br>**डॉ. मोहन मुंजाभाऊ डमरे** | ८५-८९ |
| २२ | हिंदी भाषा और रोजगार<br>**प्रा. डॉ. विरनाथ पांडूरंग हुमनाबादे** | ९०-९२ |
| २३ | जनसंचार माध्यमों की हिन्दी<br>**प्रा. रऊफ इब्राहिम महंमद** | ९३-९६ |
| २४ | जनसंचार माध्यमों की हिंदी<br>**कविता दत्तु चव्हाण** | ९७-१०१ |
| २५ | रोजगारोन्मुख हिंदी<br>**शेख मोहसीन इब्राहीम** | १०२-१०४ |

VOLUME - IX, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

# २५. रोजगारोन्मुख हिंदी

शेख मोहसीन इब्राहीम
सहायक प्राध्यापक हिंदी, श्री. संत गजानन महाविद्यालय, खर्डा, ता. जामखेड, जि. अ. नगर।

**शोध सारांश**

शिक्षा व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाती है । आज हिंदी भाषा और साहित्य की शिक्षा लेकर हजारों छात्र स्नातक और स्नातकोत्तर पदवी पाकर महाविद्यालय और विश्वविद्यालय से बाहर निकलते जा रहे हैं । प्रश्न यह निर्माण होता है की हिंदी शिक्षा रोजगार की दष्टि से उपयोगी है ? हिंदी शिक्षा व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाने में सक्षम है ? इस प्रश्न उत्तर है 'हॉं' हिंदी रोजगारोन्मुख है । हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा हैं और बहूसंख्य लोग उसे बोलते और समझते हैं । आज कई तकनीकी क्षेत्रों में हिंदी के बल पर रोजगार मिलते नजर आ रहे हैं । विज्ञापण, अनुवाद, फिल्म, समाचारपत्र, कम्प्युटर, प्रकाशन, आकाशवाणी, पत्रकारिता, मुद्रण, समालोचन ऐसे अनेक आयाम हैं जहॉं हिंदी भाषा की शिक्षा रोजगार निर्माण करने में कारगर साबित हुई है ।

**उद्देश**

1. हिंदी के रोजगारोन्मुख आयामों को उदघाटित करना ।
2. रोजगार निर्माण में हिंदी के योगदान को स्पष्ट कराना ।
3. आत्मनिर्भर बनाने में हिंदी भाषा सक्षम है, इस बात को स्पष्ट करना ।
4. हिंदी भाषा की शिक्षा लेने के लिए प्रेरित करना ।

**मुख्य बिंदू**

1. अनुवाद ।
2. विज्ञापण ।
3. इलेक्ट्रानिक मीडिया और कम्प्युटर ।
4. फिल्म तथा प्रकाशन विभाग ।
5. निष्कर्ष ।

मानव मस्तिष्क के विकास को 'शिक्षा' कहा जाता है । शिक्षा मानव की संपूर्ण शक्तियों का प्राकतिक प्रगतीशील विकास है । शिक्षा एक सजीव गतिशील प्रकिया है । शिक्षा का उददेश्य छात्रों को बहुमुखी प्रतिभासंपन्न आत्मनिर्भर बनाना है । वेदों में कहा भी गया है "सा विद्या या विमुक्तये"[1] अर्थात विद्या मुक्ति प्राप्त करने का साधन है । फिर जरुरतों के बदलने और समाज के विकास के साथ आई जटिलताओं के कारण शिक्षा के उददेश भी बदलते गए । अग्रेजी शिक्षा में शिक्षा पध्दती में बहुत से परिवर्तन किये गये और शिक्षा का प्रमुख उददेश नौकरी पाना हो गया ।

हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है । देश के बहुत से राज्यों की राजभाषा हिंदी है और अधिकांश जनता हिंदी बालती और समझती है । हिंदी का क्षेत्र व्यापक है और वह अधिकाशं लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन बन गयी है । आज वैश्वीकरण एवं ग्लोबलाईजेशन के कारण विश्व का रुपांतर 'वैश्विक गॉव' के रुप में हो रहा है

। हवाईजहाज, मोबाइल, इंटरनेट, ई–मेल, व्हिडीओ कॉल आदि के कारण विश्व एक छोटे से गॉव की तरह लगने लगा है । अंग्रेजी विश्व की प्रमुख भाषा है । विज्ञान और तंत्रज्ञान की आधिकाशं पुस्तकें अंग्रेजी में हैं । आज जहाँ हर व्यक्ति तकनीकी शिक्षा लेकर रोजगार प्राप्त करना चाहता है, वहाँ भाषा और साहित्य के अध्ययन पर प्रश्नचिन्ह उपस्थित होना कोई अचरज की बात नहीं है । हिंदी का ज्ञान पाकर आत्मनिर्भर बना जा सकता है । रोजगार उपलब्ध कराने में हिंदी कितनी सक्षम है ?

आज कम्प्युटर के सॉफटेअर हिंदी में बनाए जा रहे हैं । विज्ञान और तंत्रज्ञान की बहुत सी पुस्तकें हिंदी में उपलब्ध हैं । अनुवाद, इलेक्ट्रानिक मीडिया, प्रकशन विभाग, विज्ञापण, बैकिंग, रेल्वे, समाचार पत्र, आकाशवाणी आदि ऐसे अनेक क्षेत्र हैं, जहाँ हिंदी शिक्षा कारगर साबित हुई है । इन क्षेत्रों में हिंदी के ज्ञान के आधार पर रोजगार के बहुत से अवसर उपलब्ध हो जाते हैं ।

**अनुवाद**

विश्व में अनेक भाषाऐं बोली जाती हैं । उन भाषाओं में आपसी संबंध स्थापित करने तथा अन्य भाषाओं में रचित साहित्य, विज्ञान एवं तंत्रज्ञान से संबंधित चिंतन को समझने का माध्यम है 'अनुवाद' । किसी भाषा में कही या लिखी गयी बात का दूसरी भाषा में सार्थक परिवर्तन अनुवाद है । अनुवाद का कार्य प्राचीन समय से चल रहा है । 'वाद' का अर्थ है कहने की किया । 'वाद' में 'अनु' उपसर्ग जोडकर 'अनुवाद' शब्द बना । अनुवाद शब्द अंग्रेजी के ट्रांसलेशन शब्द का पर्यायी शब्द है, जिसका अर्थ है 'प्रस्तुत करना' । जे.सी. कॅटपोर्ट के अनुसार, ''अनुवाद एक भाषा के पाठयपरक उपादानों का दूसरी भाषा के रुप में समतुल्यता के सिद्धांत के आधार पर प्रतिस्थापन हैं ।''[2] सम्युअल जॉन्सन के अनुसार, ''अनुवाद मूल भावों की रक्षा करते हुए उसे दूसरी भाषा में बदल देना है ।''[3] अर्थात अर्थ को बनाए रखते हुए अन्य भाषा में अंतरण करने की कला ही अनुवाद है ।

वर्तमान समय में अनुवाद का महत्व बढता जा रहा है । भारत जैसे बहुभाषिक राज्य में अनुवाद का महत्व बहुत अधिक है । भारत में अनेक भाषाऐं हैं । इन भाषाओं में रचित साहित्य, विज्ञान एवं तंत्रज्ञान से संबंधित पुस्तकों को दुसरी भाषा में अनुवाद करके ज्ञान प्रचार प्रसार किया जा सकता है ।

अन्य भाषा में रचित विज्ञान एवं तंत्रज्ञान से संबंधित पुस्तकों को हिंदी भाषा में अनुवाद करना तथा हिंदी की पुस्तकों का अन्य भाषा में अनुवाद करने की मांग दिन–ब–दिन बढती जा रही है । आज के समय ऐसे अनेक विषय हैं जिनकी पुस्तकें दुर्लभ हैं । ऐसे समय ऐसे विषयों पर अन्य भाषाओं में रचित ज्ञान का अनुवाद किया जा सकता है । साथ ही इन पुस्तकों की बडी मात्रा में विकी कर धन कमाया जा सकता है ।

भारत बहुभाषिक राष्ट्र होने के कारण अनेक राज्यों को प्रशासकीय कार्यो में अनुवादक की आवश्यकता महसुस होती है, इसलिए हिंदी के साथ अन्य भाषओं का ज्ञान और अनुवाद रोजगार निर्माण कर सकता है ।

**विज्ञापण**

आज का युग 'विज्ञापण' का युग है । आज विज्ञापण किये बिना कोई वस्तु नहीं बिकती, इसलिए हर कंपनी अपने वस्तु का विज्ञापण करते हुए नजर आती है । तेल, साबूण, शैम्पू, बर्तन का साबूण, फॅन, सायकल, मोटार, टुथपेस्ट, फर्निचर, कुलर, फ्रिज, पावडर, क्रिम, इतना ही नहीं खाने पीने की चीजों का विज्ञापण भी टि.व्ही. चॅनैलों, समाचार पत्रों में दिखाई देता है । छोटी सी सुई लेकर बडी – बडी मशिनो का विज्ञापण हमें दिखाई देती है ।

आज हर प्रोडक्ट की कंपनी अलग – अलग और नये तरीके से विज्ञापण बनाकर ग्राहक को अपने प्रोडक्ट की ओर आकर्षित करना चाहती है । देश की अधिकांश जनता हिंदी भाषिक और हिंदी समझने वाली है । इसलिए विज्ञापण का महत्व और अधिक बढ गया है । ऐसे समय में विज्ञापण की कला अवगत करके हिंदी विज्ञापण क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध हो सकता है ।

**इलेक्टॉनिक मीडिया और कम्प्युटर**

भारत में हिंदी न्यूज चैनलों की संख्या बहुत अधिक है जो चोबीस घंटे हिंदी समाचार को प्रदर्शित करते हैं । इलेक्टॉनिक मीडिया से संबंधित हिंदी भाषा का ज्ञान इस क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध करा सकता है । साथ ही समाचार पत्र और आकाशवाणी विभाग में भी हिंदी का ज्ञान रोजगार उपलब्ध करा सकता है ।

"कम्प्युटर ऐसी इलेक्ट्रॉनिक युक्ति है, जो दिये गये निर्देशन समूह के आधार पर सूचना को संसाधित करती है ।"[4] इसलिए कम्प्युटर का महत्व बढता जा रहा है । कम्प्युटर के अधिकाशं प्रोग्राम और की–बोर्ड हिंदी में बनाये गये हैं । किंतु इनकी संख्या बहुत कम है । इसलिए कम्प्युटर के क्षेत्र में बडी संख्या में रोजगार की संधियाँ हैं । साथही टंकलेखन की कला अवगत करके जॉब वर्क का कार्ये किया जा सकता है ।

**फिल्म तथा प्रकाशन विभाग**

हिंदी फिल्म और सीरीयल ने हिंदी को घर – घर पहुँचाने का काम किया है । भारतीय जनमानस पर हिंदी फीचर फिल्म और सीरीयलों का बहुत गहरा प्रभाव पडा है । भारत में अन्य भाषा की तुलना में हिंदी फिल्मों की मांग और लोकप्रियता अधिक है । हिंदी फिल्म और सीरीयल के क्षेत्र में स्टोरी राईटर, अभिनेता, डायलॉग राईटर, दिग्दर्शक, गीतलेखक आदि के लिए विपुल मात्रा में संधियॉ हैं । साथ ही प्रकाशन विभाग में टंकक, मुद्रक तथा हिंदी भाषा तज्ञ आदि जैसे पदो के लिए हिंदी का ज्ञान उपयोगी है ।

साथ ही मोबाइल सिम की कंपनी में कस्टमर केअर, शिक्षा विभाग में हिंदी अध्यापक, प्रोफेसर, हिंदी तज्ञ, बैंक, रेल्वे विभाग, प्रशासकीय नौकरीयो में हिंदी भाषा का ज्ञान और अभ्यास रोजगार उपलब्ध करा सकता है ।

**निष्कर्श**

आज अनेक क्षेत्रों में हिंदी भाषा के अध्ययन व्दारा आसानी से रोजगार उपलब्ध हो सकता है । अनुवाद, विज्ञापण, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, कम्प्युटर प्रोग्राम, मोबाइल सिम कंपनी, समाचार पत्र, फिल्म, सीरीयल, नाटक, आकाशवाणी, प्रशासकीय नौकरीयों के साथ – साथ छोटे बडे व्यापारों में भी हिंदी भाषा का ज्ञान कारगर साबित हुआ है । अंतः हिंदी भाषा रोजगारोन्मुख है, ऐसा कहना अनुचित नहीं होगा ।

**संदर्भ संकेत**

1. श्रेष्ठ हिंदी निबंध – शशि शर्मा प्रभा, प. सं. 80
2. Prakashblog-google.blogspot.com
3. Prakashblog-google.blogspot.com
4. प्रवियोगिता साहित्य सीरिज–प्रश्नपत्र –1 शिक्षण एवं शोध अभियोग्यता प.सं. 202